प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, अनामिका एवं नासिरा शर्मा का का साहित्यिक मूल्यांकन

कु. दीप्ति
शोधार्थी हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

शोध–सार

आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में किसी भी साहित्य के कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। प्रभाखेतान, मैत्रेयी पुष्पा, अनामिका तथा नासिरा शर्मा ने नाटक, कहानी, कविताओं और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने दी योग्य कृतियाँ देते हैं। महिला साहित्यकार स्त्री लेखन के प्रमुख स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुई हैं; हिन्दी स्त्री साहित्य में स्त्री लेखन पर इन्होंने एक अलग वाले परम्परावादी साहित्यकार के रूप में ख्याति अर्जित की है, बल्कि उनकी कृतित्व किसी अर्थगर्भिता तथा प्रासंगिकता भी दिनानुदिन बढ़ती ही गयी है। कृतित्व सृष्टि कला, रचना का गुण, धर्म मा भाव होता है। सतः शाब्दिक अर्थों में –कर्म होता है, कृतित्व एक बहुत ही अवध और खूबसूरत नाम है जिसे काफी किसी लेखक/लेखिका आदि के द्वारा किया गया समस्त रचनात्मक लोग पसंद करते हैं। कृ तित्व का अर्थ सृष्टि कला कर्म है और कृतित्व व्यक्ति काम तत्व की श्रेणी में आता है।

इस दृष्टि से इन महिला लेखिकाओं की महत्ता पहचानने एवं स्थापित करने में स्त्री लेखन में ऐतिहासिक योगदान रहा है। स्त्री लेखन पर इन्होंने कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में कई यादगार कृ तियाँ दी विविध रचनाओं के माध्यम से स्त्री करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन किया।

मुख्य बिन्दु

साहित्यकार, परम्परावादी, अर्थगर्भिता, दिनानुदिन, रचनात्मक

हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री तथा नारीवादी चिंतक प्रभा खेतान मे अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर स्त्री जीवन की विविध समस्याओं को उठाया है, वही दूसरी ओर उन्होंने इन समस्याओं से स्त्री को रोज दो–चार कराने वाली सामाजिक व्यवस्था की सच्चाई से रू–ब–रू भी कराया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के बीच स्वतन्त्रता तथा समानता के अधिकार के लिए संघर्षरत विविध चरित्रों को गढ़ा। ये स्त्री पात्र जहाँ एक ओर पितृसतात्मक समाज व्यवस्था की सड़ी–गली मान्यताओं को मानने से इन्कार करती है, वहीं दूसरी ओर अपने लिए अलग राह बनाने की ओर अग्रसर है।

"प्रभा खेतान ने व्यवसाय से साहित्य, घर से सामाजिक कार्यों तथा देश से विदेशों तक के सफर में अनेक मंजिलें तय की प्रारंभ से शुरू किए अपने जीवन को खुले आकाश की ऊंचाईयों तक पहुंचाने के प्रभा के साहस और क्षमता को कई पुरस्कार व सन्मानों से भी नवाजा गया।"[1]

प्रभा खेतान का जन्म 1 नवंबर, 1942 हुआ था। प्रभा खेतान साहित्य में स्त्री यंत्रणा को आसानी से देखा जा सकता है। बंगाली स्त्रियों के बहाने उन्होंने स्त्री जीवन में काफी बारीकी से झांकने का बखूबी प्रयास किया।

उन्होंने कई निबन्ध भी लिखे प्रभा खेतान फाउन्डेशन की संस्थापक अध्यक्षह नारी विषयक कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदार, फिगरेट नामक महिला स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापक, 1966 से 1976 तक चमड़े तथा सिले सिलाए वस्त्रों की निर्यातक अपनी कंपनी न्यू होराईजन लिमिटेड की प्रबंध निदेशिका हिन्दी भाषा की लक्ष्य प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री तथा नारीवादी चिंतक तथा समाज सेविका थी। उन्हें कलकत्ता चौंबर ऑफ कॉमर्स की एकमात्र महिला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त था। वे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सदस्या थीं।

"कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि लेने वाली प्रभा ने ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद पर पी. एचडी की थी। उन्होंने 12 वर्ष की उम्र से ही अपनी साहित्य यात्रा

की शुरुवात कर दी थी और उनकी पहली रचना (कविता) सुप्रभात में छपी थी, तब ये सातवीं कक्षा की छात्रा थी। 1980–1981 से वे पूर्ण कालिन साहित्यिक सेवा में लग गई।''[2] सीने में तकलीफ के बाद कोलकाता के आमरी अस्पताल में उनका उपचार– चला तया बाईपास सर्जरी के दौरान प्रभा खेतान को असामयिक निधन 20 सितम्बर, 2009 को हुआ।

''फ्रांसीसी रचनाकार सिमोन द बोउवा की पुस्तक दि सेकेंड सेक्स के अनुवाद स्त्री उपेक्षिता ने उन्हें काफी चर्चित किया। इसके अतिरिक्त उनकी कई पुस्तकें जैसे बाज़ार बीच बाज़ार के खिलाफ और उपनिवेश में स्त्री जैसी रचनाओं वे उनकी नारीवादी छवि को स्थापित किया।''[3] अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर करने वाली आत्मकथा अन्या से अनन्या लिखकर सौम्य और शालीन प्रभा खेतान ने साहित्य जगत् को चौंका दिया। डॉ. प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री यंत्रणा को आसानी से देखा जा सकता है।

बंगाली स्त्रियों के बहाने इन्होंने स्त्री जीवन में काफी बारीकी से झांकने का बखूबी प्रयास किया। आपने कई निबन्ध भी लिखे। डॉ. प्रभा खेतान को जहाँ स्त्रीवादी चिन्तक होने का गौरव प्राप्त हुआ वहीं वे स्त्री चेतना के कार्यों में सक्रिय रूप से भी साथ हिस्सा लेती रहीं। उन्हें प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार और टॉप पर्सनैलिटी अवार्ड भी प्रदान किया गया। साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिये केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार राष्ट्रपति ने उन्हें अपने हाथों से प्रदान किया।

संघर्ष का अर्थ है लड़ना अंत संघर्ष का पूर्ण अर्थ जीवन के संदर्भ में अस्तित्व के लिए लड़ना है। वस्तुजगत में हर प्राणी में संघर्ष अनिवार्य होता है। प्रत्येक प्राणी जीवन जी चाहता है। **''अतः उसका जीवन अभी साध्य हो संघर्षरत तभी सकता है जबकि यह संघर्ष होता है। जीवन एक संघर्ष, एक चुनौती है जिसे हर इंसान को स्वीकारना पड़ता है।''**[4] संघर्ष में न सिर्फ उन्हें ऊर्जस्विता मिलती है, बल्कि जीवन की विविध दिशाओं और दशाओं से उनका परिचय भी होता है। मानव समाज का इतिहास स्त्री को सत्ता, प्रभुत्व एवं

शक्ति से दूर रखने का इतिहास है। नारी की उर्जा से ही उसकी अपनी पहचान बनाने और कुछ कर दिखाने की ताकत छिपी हुई है।

"समाज में स्त्री को अलग–अलग रूपों में देखते हैं। उनकी भावनाएँ, इच्छाएँ, सोच आदि उनके परिवेश के अनुसार ही परिलक्षित होती है। हर एक स्त्री अपनी जिंदगी में स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है। बदलते परिवेश में ऐसा हो भी रहा है। नारी आज हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है।"[5] हम यह कह सकते है। कि स्त्री, पुरुष के साथ–साथ चल रही है। इस पुरुष प्रधान समाज में हर एक न क्षेत्र में पुरुषों के वर्चस्व का डर रहता है। किसी में किसी कारण स्त्री हर रोज शोषित होती रही है। हर एक परिवार में कुछ न कुछ समस्याएँ रही है। पति–पत्नी, स्त्री–पुरुष का संबंध, आर्थिक स्वतंत्रता, अपने मकसद पूरा करने की समस्याएँ और पुरुष होने का अहम सबसे बड़ी समस्या समाज व सामाजिक मर्यादाओं की है। यह समस्या आज की देन नहीं है, सदियों से चली आ रही एक कुप्रया है। आधुनिक समाज के बदलते मूल्यों को रेखांकित करते हुए प्रभा खेतान की उपन्यास आओ पेपे घर चलें में नारियों का संघर्ष देख सकते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा अपने साहित्य के माध्यम से पुरुष द्वारा लिखित इतिहास को पलट देना चाहती है। वह पुरुषों द्वारा बनाई गई आचार संहिता का पुरजोर विरोध अपनी निर्भीक भाषा में करती है। वह पुरुष वर्चस्व से स्वतंत्रता पाने की आवाज उठाते हुए स्त्री को मानसिक यंत्रणा से मुक्ति दिलाना चाहती हैं इसलिए मैत्रेयी पुष्पा का लेखन उस लेखन से सर्वथा भिन्न है, जिसमें लेखक स्वयं अपनी छवि का निर्माण करता है।

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवंबर 1944 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा नामक गांव में हुआ था। मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य के समकालीन महिला लेखन की प्रमुख हस्ताक्षर है। उन्होंने बुंदेलखंड कॉलेज, झांसी से हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया। स्त्री की पक्षधर, स्त्री के विचार को साहित्य के माध्यम से रेखांकित करने वाली कथा शिल्पी मैत्रेयी पुष्पा अपने पहले कहानी संग्रह चिन्हार से चर्चा के केंद्र में हैं। व्यक्ति के जीवन में पारिवारिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक रचनाकार के व्यक्तित्व के बनने में वंश, कुल–गोत्र, सामाजिक, शैक्षिक परिस्थिति एवं तत्कालीन विचारधारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कृतिकार अपने आप में संवेदनशील होता है इसलिए परिवार, समाज, युगबोध रचनाकार के चेतन तथा अवचेतन में प्रेरणा देकर गहरा प्रभाव डालते हैं।

उनका लेखन जो परंपरागत सामाजिकताओं, अत्याचारों के कटघरे में खड़ाकर उनके स्त्री–विरोधी चेहरे को बेनकाब करता है, किंतु मैत्रेयी पुष्पा रुक नहीं जाती है, स्त्री के उस पौरूष और सक्रिय प्रतिवाद को भी दर्ज करती हैं, जिसके बगैर नई सामाजिक संरचना एक लेखिका की कोरी बकवास भर बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. *पुष्पा मैत्रेयी, चाक, राजकमल पेपरबैक्स नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.60*
2. *शर्मा नासिरा, संगसार, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2017, पृ. 32*
3. *अकुली शहनाज, उषा प्रियम्वदा की उपन्यास सृष्टि, चिन्तन प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2010, पृ. 41*
4. *रस्तोगी गिरीश, बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंज, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, संस्करण 2015, पृ. 122*
5. *भोसले नीता द, उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध, वाड्मय बुक्स अलीगढ़, संस्करण 2014, पृ. 77*

Contributors Details:

कु. दीप्ति
शोधार्थी हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)